रा-रा
८८
88

रनकौं नवहिं पइये ॥ इतिश्रेनरा । अथश्रामोगः ॥
परम पुनीत प्रीति रीतिकी जानहुं दृढ करि चरण
कमल जो गहिये ॥ छीत स्वामी गिरि धरन श्रीवि
ठल पहि निधि छांडि अब कहां जो जइये ॥
रागिनी राम कली ताल ३ जमुनाकेपद ॥
चितमे जमुना निस दिन जो राखौ ॥ इतिश्रस्याई

भोगः ॥ तन मन धन सब लाल गिरि धरनकौं दे
करि चरण जब चितहिं लावे ॥ कौन स्वामी गिरि
धरन श्रीविट्ठल नैननि प्रकट लीला दिखावे ॥
रागिनी रामकली ताल २ जमुनाके पद ॥ गुण
अपार एक मुख कहां लौं कहिये ॥ इति अस्थाई ॥
तजो साधन भजो नाम जमुनाजीकौ लाल गिरि ध

रा॰ना॰ के झूले ॥ रतिप्रस्थाई ॥ लुब्ध मकरंदके बस
८९ भए भ्रमर जे रवि उदै देषि मानौ कमल फूले ॥
8.9 रसंतरा । अथ आभोगः ॥ करत गुंजार सबली
लेके सांवरो ब्रज बधू सनन तन सषि जो भूले ॥
चत्रभुज दास जमना प्रेम सिंधुमे लाल गिरिध
रन सब हरषि फूले ॥ रागिनी रामकली ताल

भक्तके वस कृपा करतहैं सर्वदा ऐसो जमुनाजी को
है जो साखो ॥ अंतरा । प्रथमआभोगः ॥ जाहि मु
खतैं जमुनैंतें नाम यह उचरै संग कीजे अब जाइ ता
को ॥ चत्रभुज दास अब करतहैं सवन सों नातें ज
मुनैं जमुनैं जो भाखो ॥ रागिनी रामकली ता
ल ॐ जमुनाके पद ॥ प्राणपति विहरत जमुना

रा·गा
५.
९०

रसमैं भीजे ॥ रागिनी रामकली ताल ३ जमु
नाके पद ॥ हेत करि देत जमुनैं वास कुंजे ॥ ३
नित्य ध्याई ॥ जहां निसि वासर रासमैं रसिक ब
र करहोलौं बर निये प्रेम पुंजे ॥ इंस्यनता ॥ ध्रुव
आभोगः ॥ थकित सलिला नी रथ किन ब्रज ब
भूमी रकोउ बन पवन धीर समरलि सुनिजे ॥ ब

१ जमुनाके पद ॥ वार वार जमुनैं गुण गान
कीजे ॥ इति अस्थाई ॥ एहि रसना तैं जो नाम र
स अम्रत भागय जाके सोई जो लीजे । इत्यंतराः
अथ आभोगः ॥ भांन तनया दया अतिहि करु
णा मया इनकी करे आमया सदा जीजे ॥ वन
भेज दास कहे सोई पिय पास रहें जोई जमुनाके

रा॰ना
५२
91

कौ रूप अद्भुत देत आप जैसौ ॥ नंददास जो जा
नि दृढ चरण गहे एक रसनां कहा कहूं विसेसौ
रागिनी रामकली ताल ॥ जमुनाजी के पद ॥
नेह कारन जमुनें प्रथम आई ॥ इति अस्थाई ॥ भ
क्त के चित्त की वृत्ति सब जानही ताहितें अतिही
आतुर जो धाई ॥ इंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ जै

नर्भज दास जमुनैं जो पेकज जानि मधु पकीना
ई चिन लाइ गुंजे ॥ रागिनी रामकली ताल
जमुनाके पद ॥ भक्त पर करी कृपा जमुन ऐसी
अतिसुखदाई ॥ छांडि निज धाम विश्राम भूतल
कियो प्रकट लीला दिखाई जो जैसी ॥ अंतरा
अथआभोग: ॥ परम परमारथ करत हैं पवनि

रा-गा
९२
92

नेरा ॥ अथ आभोग ॥ सकल सुख देन हार तातें
करो उच्चार कहत नहीं वार भूलि जिनि जावो ॥
नेद दास की आस जमुनैं सरन करी तातें कहे
घरी घरी चित लावो ॥ रागिनी रामकली ताल
जं जमुनाजी के पद ॥ भाग्य सौ भाग्य जमुनैं
जो देई ॥ इति अस्थाई ॥ दान लौकिकन जे ग्रहि

सी जाके मन हती मन इच्छया नाहिं तैसो साधु जो

पुजाई ॥ नंददास प्रभु नाथ नाहि परवी ऊत जो

ई जमुना जूके गुण जो गाई ॥ रागिनी रामकली

ताल ॐ जमुनाजीकेपद ॥ जमुनें जमुनें जमु

नें जो गावे ॥ इतिअस्थाई ॥ सेस सहस्र मुख गा

वत निस दिना पार वेही पावत नाहि पावो ॥ ३ ॥

ग.ग.
९३
93

मर्यादा दिक सबै लईह्न ऋषिकौ ऋषि पति निश्चै मानौं
रंथ्नतरा । अथ श्राभोगः ॥ स्वाति जल बुंद जब पर
तहै जाहिमैं ताहिमैं होतनते सोजो वानो ॥ जमुनै स्व
पा जान सिंधुजल वहिमान सुर गुण सुरकहे लो व
खानौं ॥ रागिनी रामकली ताल जमना
पद ॥ भक्तकौ स्याम जमुनै श्याम ओरे ॥ इतिश्रस्या

जमुनै भजे लाल गिरिधरनकौं ताहि वर मिलैगी
इहैनितरा ॥ अथश्रीभोगः ॥ भगवदी सेवा करि बात
उनकी ले सदा सान्निध्य रहै केली मेरी ॥ नंददास
के जाहि वल्लभ कृपा करे ताके जमुने सदा वस ओरे
री ॥ रागिनी रामकली ताल ऊ जमुनाजी के पद
नाम महिमा ऐसी जो जानै ॥ इति अष्टपाई ॥

रा॰स॰
९४
94

देखिहैं नहीं सुनी नाहि कहि आपनी ताकी यह बा
त कोऊ कैसे मानैं ॥ इत्यंतरा ॥ अथ श्री भोगः ॥ ता
ही के हाथ निरमोल नवादी जिये जोई नीकैं करि प
रखि जानैं ॥ सूरकहि कूरते दूरवसिये सदा जमुन
कौं नाम लीजे जो छानैं ॥ रागिनी रामकली ता
ल जमुनाके पद ॥ चर्चरी ॥ जमुनैं पति दास

ई॥ ग्यानहीन्हांत ग्रंथ जानतना के सकल जनमहू रहत
नाहि हाथ जोरे ॥ इत्यंतरा ॥ अथ्याभोगः अनुभवी
विना अनुभव कहा जानहीं जाकौं छिपा नहीं चित
चोरे ॥ प्रेमके सिंधुकौं मर्म जान्यौं नहीं हार कहि कहा
भयो देह चोरे ॥ रागिनी रामकली ताल जमतना
पद ॥ फलफलित होत फल हप जावैं । इति गुरुस्याई

रा·रा· जाऊं ॥ इतिश्रस्थाई ॥ ऐसी महिमा जानि भक्त की
९५ सावदानि जोई मांगों सोई जो पाऊं ॥ इस्पेनरा ॥ श्र
95 ध्याभोगः ॥ पतित पावन करन नाम लीने नर
न हरक करि गहे चरण कहुं न जाऊं ॥ ऊंभन दा
स किरि चरण सरन निरावैने पही वाहन नहीं
पलक लाऊं ॥ रागिनी राम कली ताल ८ जम

के चिन्ह न्यारे ॥ इति श्रमस्याई ॥ भगवदी कों भगवद
मेळा मिलि रहे ताके बसन हीयें आए प्यारे ॥ इंसेतरा
श्रयश्राभोगः ॥ गरुड जमुनैं वान जोइ श्रव जानहीं ता
के मन मोहन नैंन नारे ॥ स्हर स्हाव मार निर्हारवे पा
वैंही जापरहोय वलभ कृपारे ॥ रागिनी रामकली
ताल ॐ जमनापद ॥ जमुनैं रस खानकों सीम

रा॰ रा॰ ९६ 96

रागिनी रामकली ताल ३ जमुनापद ॥ जमुनैं
पर तन मन प्राण वारौं ॥ इति अस्थाई ॥ जाकी
कीरति बिमल कौंन अब कहि सकै नाहिं नैंननतैं
नैने उटावैं ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोग ॥ चरण
कमल इनके जो चिंतत रहौं निस दिन नाम मुख
तैं उचारौं ॥ कुंभन दास कहै लाल गिरिधरन म

नाकेपद ॥ जमुनें अगनित गुण गनें न जाही ॥
इतिअस्थाई ॥ जमुना नट रेन इतनें होय वेन उ
नकी साख देनकी कहूं वडाई ॥ इत्यंतरा ॥ अथ
आभोगः ॥ भक्त मांगत जोई देत तेही छिन सोई
ऐसी करे कौन प्रण निबाही ॥ ॐ भन दास वि
रि चरन साख निरखतें कहो कैसे कीर मन अघाई ॥

रा॰रा॰ भन दास जो प्रभु कौ मुख देखत पहि लिय लेखत
९७ जमुनैं जो भरता ॥ रागिनी राम कली ताल ३ ॥
97 जमुना पद ॥ रामरस सागरे जमुन जानी ॥ इति
अस्थाई ॥ अति छिन उतन बहत धारा ननैं राखत
अपने उर मा ऊदानी ॥ इंतरा ॥ अथाभोगः
भक्त कौ सहे भार देत प्राण अधार अतिहि बोलत

खे इनकी कृपा भई तो निहारौं ॥ रागिनी रामक
ली ताल जमुना पट ॥ भक्त इच्छा पूरन ज
मनै जो करना ॥ इतिश्रस्थाई ॥ विनहि मांगे देत
कहां लौं कहूं देत जैसे काहू को कोऊ होय भरना
इंतना । अथआभोगः ॥ जमुना पुलिन रास ब
ज वधू लीयें पास भेंट भेंट हास मन जो हरना ॥ ॐ

गा॰गा॰ जैसैं गावत जननी पुत्र वारे ॥ श्रीविठल गिरिधरन
९८ सेवा विहरतैं भक्त को एक छिनना विसारे ॥
१४ रागिनी रामकली ताल ऋ जमनाजीकेपद ॥
कौन पैं जात जमुनैं जो वरनी ॥ इतिश्रध्याई ॥ स
वहिन को मन मोहन हरत सो पीयको मन एजो
हरनी ॥ इत्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ इन विना एक

मधुर मधुर बानी ।। श्री विठ्ठल गिरिधरन बरबस
कीये कौन पै जात समहिमा बखांनी ।। रागिनी
रामकली ताल ३ जमुनापद ।। भक्तप्रति पा
लि जंजाल टारे ।। इति प्रस्याई ।। अपने रस रंगामें सं
ग राखत सदा सर्वदा जोई जमुने उबारे ।। इत्यंतरा ।।
अथ आभोगः ।। इनकी कृपा अब कहां लौ बरनिये

रा॰रा॰ रंग परम प्रीतिहि दुर्लभ परम छाडि सगरे करम
९९ प्रेम पागी ॥ श्रीविठल गिरिधरन सोनिधि प्रबभ
99 क्तकौं देतहैं बिनहि मांगी ॥ रागिनी रामकली
ताल ३ जमुना पद ॥ जमुनें हमसों एकहो
जु हमहें ॥ इतिअस्थाई ॥ करि कृपा दरस ति
सि बासर दीजिये तिहारे गुण गानको रहे उघमंहो

छिन रहेन जीवन धन ब्रज चंद मन आनंद करनी ॥
श्रीविठ्ठल गिरिधरन सहित आय भक्त के हेत अव
तार धरनी ॥ रागिनी रामकली ताल जमनापद
जमुना जो नाम लेसो सभागी ॥ इतिअस्थाई ॥ सो
ईरस रूपको सदा चिंतन करे नेक नहि कलपरे
जाहि लागी ॥ इत्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ श्रीहिमा

रा॰रा॰ गिनी जिनके ऐसे धनी सुंदर श्याम ॥ इत्येनरा ॥

१०० अथ आभोगः ॥ देन संजोग रस ऐसी पीय है जो

100

बस सुनन सजस नीहारो पूरे सब काम ॥ कुं

ल दास निकट है भक्तकै कारनै जमन एक छिन

नहीं करै विश्राम ॥ रागिनी राम कली ताल

जमना पद ॥ जमनेके नाम अघ हर भाजे ॥

इस्येतरा ।। अथयज्ञाभोगः ।। तुमसज्जपा पंनै सकल नि

धि पावहीं चरण कमल चित भ्रमर भ्रमहीं ।। कु

म्भदास निकरे कौन यह तप कियो तिहारे द्रुग व

रत हेलना डुमहीं ।। रागिनी रामकली ताल

जमुनाके पद ।। ऐसी केजी कृपा लीजिये नाम

रतिअस्याई ।। जमुनैं जग वेदनी गुणान जानत जो ।

रा॰रा॰ जमनैंके नामनैंई जोलेहैं ॥ इतिध्रुपाई ॥ जिन
९८ की लगन लागी नंदलालसौं सरवस देकैं निकटरैहैं
10 इत्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ जिनहि सुगम जानवा
त मनमें वांनि विना पहि वांनि कैसें जोपैहैं ॥ कु
ल दासनि जमनें नामनौका भक्त भव सिंधुतें यों
जोनरैहैं ॥ रागिनी रामकली ताल जमनाप

इति अस्थाई ॥ जिनके गुण खानि के लाल गिरिधर
न पिय आय मन भाव ताकैं विराजे ॥ इंतरा ॥
अथ आभोगः ॥ ते छिनका जनों के जो सगरे सर
न जाइकैं मिलत ब्रज वधू समाजे ॥ कृस्न दास
निकरहू नाहि अब कौंन डर जाके ऊपर जमुनै सी
गाजे ॥ रागिनी रामकली ताल फ्र जमुनापट

रा॰रा॰ लीलाल जमुनापद ॥ जमुनै हाव कारनी
१०२ प्राण पतिकौं ॥ इतिश्रुत्याई ॥ पीयजे भलन जि
102 न्हैं हाथिकरि देत तिन्हैं कह्हेलौ कहिये श्रुतिहि इत
के हितकै ॥ इत्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ पिय संग
गोन करैं श्रुति रस उमगि भरे देत नारी करैं लेत
जिनकै ॥ दास परमानंद पाय अब ब्रज चंद

द ॥ जसुनैंकी आस अब करत है दास ॥ इतिश्रस्था

ई ॥ मनक्रम वचन कर जोरिकैं मांगत निसदिना

राखिये अपनैंही पास ॥ इत्यंतरा ॥ अथआभोगः

जहां अवरसिकवर रसिकनी राधिके दोउ जन संग

मिलि करत हैं रास ॥ दास परमानंद पाय अब ब्रज

चंद देखि सिराने नैंन मंद हासे ॥ रागिनी राम क

रा॰रा॰
१०३
103

परमा नंद नाथ अब ब्रज चंद राखे अपने शरण
वहै जो जान ॥ रागिनी राम कली ताल
जमकनापद ॥ जमुनें पियकों वसनतम जो कीनें
इति अस्थाई ॥ प्रेमके फंदनें बांधि राखे निकट
ऐसे निरमोल नग मोल लीन ॥ इति अंतरा ॥ अथ
आभोग: ॥ नेम जो पढावत नहीं अब पावत

पहिं जानत अति प्रेम रागिके ॥ रागिनी राम क
ली ताल ३ जमनापद ॥ जमुनेके साथ अब फि
रत हैं नाथ ॥ इति अस्थाई ॥ भक्तके मनके मनोर
थ हरत सबै कहों लौं कहिये अब इनकी जो गाथ
इतेनवा ॥ अथ आभोगः ॥ त्रिविध संगार भूषन
अंग अंग सजे बरनीन जात सो भावती गात ॥ दास

रा.रा.
१०४
104

जाके भजनतें हरि हीयमें बसैं करैं कृपा सर्वदा प्रप
नी पितुमात ॥ कहत व्रज पति नाम सबनसों स
मुझाय परी इनके चरण और नाहि अधार ॥
रागिनी रामकली ताल ८ जमुनाके पद ॥
एकरसना गुण अपार कौं करि बरनौं ॥ इतिश्र
प्याई ॥ साधन सबै तजो भजो इनके नाम जाके ब

निस दिना तिहारे रस रंग भीने ॥ दास पद मांगे र

पाय श्रव ब्रज चंद परम उदार जमुनैं जो दीने ॥

रागिनी राम कली ताल १ जमुनाजी के पद

जगमैं यही सार भजि ले बारं बार ॥ इति अस्थाई

श्रीजमुना जी कौं नाम जप निस दिना जाते उतरे

गो भव सागर पार ॥ इतेंतरा ॥ अथ आभोग: ॥

रा॰ रा॰ १०५

105

सिंधुमे अलिनिहिं हरषित भई कमलज्यौं फूलन रवि
प्रकासे ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ ननैं मन
नैं प्राणनै सर्बदा करति है हरि सेवा मङ्गल हासे ॥
कहत ब्रज पति नाम सवनसौं सम्भजाय मिटे ज
मत्रास इनहीं उपासै ॥ रागिनी रामकली ताल
जमुनापद ॥ जमुनासी नाहीं कोउ डरवकी

सिरन नैंकु गोनरनौं ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः
एकमनमैं निर धार करिके करो सदा नट इनके
निकट रहनौं ॥ कहत ब्रजपति नम सवनसौं स
मझाय जपो हरि नाम और कछु करनौं ॥ रागि
नी रामकली ताल 3 जमतापद ॥ पिय मेरा
देरा भरि करि विलासै ॥ इति अस्थाई ॥ श्रवनरस

रा॰रा॰ श्रीजमुनाजी तिहारो दरसहो पाउं ॥ इति गुसांई ॥
१०६ श्रीगोवर्द्धन श्रीवृंदावन ब्रज राज सेवा लगाउं ॥ इते
106
नवा ॥ अथ राग भैरो: ॥ दिन दस पांच रहें श्रीगोकुल
ठकुरानी घाट न्हाउं ॥ दासन ऊपर करो कृपा निज
संतनके संग आउं ॥ रागिनी रामकली नाल
जमुनाके पद ॥ जगतमें श्रीजमुनाजी परम कृपा

हरनी ॥ इतिश्रस्थाई ॥ जाके स्नानतें मिटेतहे सब
पाप होतहे आनंद सबकी करनी ॥ इतिअंतरा ॥
अथआभोगः ॥ महिमांअगाय अपार इनके गुण स
कल जस वेद पुराण वरनी ॥ कहत व्रजपति न
मसवनसों समझाय छूटे जम डरजो आवे इनकी
सरनी ॥ रागिनी रामकली ताल ॐ जमनापर

रा·रा·
१८
107

ननथैय ननथैय नना ।। इति गुरुस्थाई ।। मरदंगाय मृद
मृद मताल उपंग मिलि झनि देत मधप मधु मधा ।
इतंतरा ।। अथ आभोगः ।। टिपारो सिर पीत अनि
लाल का छनी बनी किंकिनी झिनि झिनि गानि
लेन गावन स्वर समा ।। गोविंद प्रभु गोप बालक
जयजय प्रेम प्रचरका ।। रागिनी रामकली ताल

ल ॥ इतिश्रस्थाई ॥ विनती करत नरत हानि लीनी
भयहूँ मोपे दयाल ॥ इत्यंतरा ॥ अथश्राभोगः ॥
जोकोउ भजन करत निरंतर तातैं उरत जमकाल ॥
ब्रजपतिकी अति प्यारी कालिंदी सुमिरन होत नि
हाल ॥ रागिनी रामकली ताल जमुनापद ॥
चर्चरी ॥ सुमन मोहन रसिक साजन सहित ग्रग्ना

गा॰गा॰ जे सुंदर वरकी ॥ इति ध्रुपाई ॥ नंद किसोर जसोदा
१०८
108 न नंद नागरन वलं नायन महरकी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ
आभोग: ॥ नव विसाल मृदु हास मनोहर श्रवण सु
धा स्राव मोहन करकी ॥ बिहारी दास लोचन चको
र नित प्रेम प्रिया भज यरकी ॥ रागिनी रामकली
ताल जमनापद चर्चरी ॥ सुभग श्यामके सेरा

जमनापद ॥ आरति कीजे श्याम सुंदरकी ॥ इति
सुख्याई ॥ नंद कुमार राधिका वरकी ॥ इंयेनरा ॥
श्रद्धाभोगः ॥ भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती ॥
साधु संगति करि सुन दिन राती ॥ आरति ब्रजजुव
ती मन भावे श्यामलीला हित हरि वेश गावे ॥
रागिनी रामकली ताल ३ जमनापद ॥ आरतिकी

जमनापट ॥ चर्चरी हरिमानी नाथ ऐबर दीजै नंद
नंदन कुंवर रसिक वर मन हरन सुनऊ गिरि वर धा
न नीत कीजे ॥ इति ध्रुव्याई ॥ सकल ब्रज नागरी
रासिनमरी सदा तन मोक सीत प्रति होत भीजे ॥
ईस्वनरा ॥ अथ आभोगः ॥ ज्ञीत स्वामी प्रभिन गु
ण गणनि आगरे विनती करति सबे मोति लीजे ॥

राधिका विराजे ॥ इति अस्थाई ॥ नैन आलस भरी
सकल निसि सुख करी केह हरि भज परी काम ला
जे ॥ इअंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ मनक कंचन तनी
पीक हगासें सने अति हीर समें सनी सुप भाजे ॥ छबी
तखामी गिरि पवनके मन वसी मनहीं मनहसी
सुख दीयो आजे ॥ रागिनी रामकली ताल ॥

रा॰रा॰ जमुनापद ॥ करन कलेउ मोहनलाल ॥ इति श्रुष्या

११ ई ॥ मांषन मिश्री हूध मिलाई मेवा परम रसाल ॥

110 इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ दधि ओदन पकवांन

मिठाई षात षवावत ग्वाल ॥ कोन स्वामि बन

गाइ चरावन चले लटकि पशु पाल ॥

रागिनी राम कली ताल ३ जमना पद ॥ राधिका
श्याम सुंदर को प्यारी ॥ इति ग्रस्थाई ॥ नख सिख से
गा अनूप विराजत कोटि चंद दुति वारी ॥ एक छिन
संग न छाडत मोहन निरखि निरखि बलिहारी ॥
छीत स्वामि गिरिधर बस जाके सो वृष भांन दुलारी
इति आभोग: ॥ रागिनी राम कली ताल ॥

रा.रा. बनमें रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै ॥ सूरदास

१११ प्रभु तिहारे मिलनकों वेद विमल जस गावै ॥ ॥

रागिनी रामकली ताल चर्चरी ॥ नमो देवि

यमुने नमो देवि यमुने हरकृस मिलानां नतराय ॥

इति अस्थाई । निज नाथ मांगं दायिनि कुमारी का

म पूरके कह भक्तिदाय ॥ ध्रुवे । इत्यंतरा । अथ ।

रागिनी रामकली ताल ४ षट्पदी जमुनाजीके

सं म प । प ध प । म ग रे सं रे ग म । ग रे सं

श्रीजमुनाजी तिहारो दरस मोहि भावे ॥ इतिप्रथम्या

प म ध । नि सं ध नि सं । रे सं नि ध प ग म प । ध प

ई श्रीगोकुलके निकट बहत हो लहरनकी छबि

म ग रे सं प म । ध नि सं ध

भावे ॥ इत्येतरा प्रथमाभोगः सब करनी दुःखहर

नि सं रे । सं नि ध प प म ग । प ध प म ग । रे सं प म

नी श्रीजमुना जो जन प्रात उठि न्हावे ॥ मदन मो

ध । नि सं ध नि सं रे सं नि ध प म ग म प । ध प म । ग रे सं प म

हन जूकी खरी पियारी पटरानी जो कहावे ॥ हेदा

ग॰ग॰ ल कमलारुण द्युति हरउ पति मिलित जल भेरुणास्र
११२ ना ॥ व्रज युवति कच कुंभ कुंजमारुण म्रर: स्मारय
112 सि मार पित्तर धुना ॥ अथिर जनि हरि विहरति मी
हितं कुलनया भियस्र भगानयना मशनि नवषे ॥
नयन युग मल्प मिनि वहुन रागिणव नानि रसिक
नानिथि नया करुषे ॥ रजनि जागर जनित रागा रे

आभोगः ॥ मधुप कुल कलित कमलावली व्याप
देश यापित श्रीकुल घन भक्त हृदये ॥ सतत मति
शयित हरि भावना जाननला रूप्य गादित निज
हृदये ॥ निज कुल भव विविध नकु कुसुम घन की
र शोभया विलस दलि हृंदे ॥ स्मार यामि गोपी हृंद
रजित सरसमी शाव घना नंद कंदे ॥ उपरि वल दस

रा·रा ११३ 113

नाटक चलन खनि रस संगीत श्रुत मद खदिन मधु
प क्षन विनोदे ॥ निज ब्रज जना वना यात्र गोवर्द्ध
ने राधिका हृदय गान हृय कर कमले ॥ रति मति शा
यितरस विटल स्याश्च ऋकु वेषउ निनदा ज्ञान मरले ॥
रागिनी राम कली ताल ॐ षट्पदी ॥ प्रिय सं
ग भरि रंग करि कलोले ॥ रति प्रस्याई मवनको

जित नयन पंकजे विहरति हरि मीलसे ॥ मकरंद भर
मिषेणानंद स्रविता सतत मिहहर्षाश्रु मेवसे ॥ तट
गता नेक स्तक सारिका स्मति गणस्तवन विविध गु
ण सिंधु सागरे ॥ संगता सतत मिह भक्तजननाप
हति राजसेवी सरस सागरे ॥ रति भर श्रम जलो दि
न कमल परिमल व्रज पवनि जल विहरति मोदे ॥

रा॰गा॰ ११४ ऐसी जमुना जानि नेम करो गुणगान रसिक प्रीत

114 म पायनेरा मूले ॥ रागिनी रामकली ताल

कहत हरिख मार निहोर करके ॥ इतिअस्थाई ॥

इन बिना ऐसी कौन को है सखी हरत दुख दंद

बरषें ॥ इतिअंतरा ॥ अथआभोगः ॥ ब्रह्म सेबेय

जब करतहें जीकौं नवाहि इनकी रोमभुजा फरके

खव दैंन णियको करत सैन चितन परत वेनजब
हिंवोले ॥ इमनरा । ष्यखमोगः ॥ अतिहि वि
ख्यान सब बीत इनके हाथ नामलेनहि कृपा करि
अनोले ॥ दरस करि परस करि ध्यांन हियमैं धरैं
सदा व्रज नाथ इन संग झोले ॥ अतिहि खव करन
इरव सबको हरन यह लीनोहै परन द्विजही कूले ॥

रा॰रा॰ अज्ञान ग्रंथ हरि करि जाहि मिल बत पीय और प्या

११५ री ॥ इसेतरा। अथयत्राभोगः॥ जिनहि संदेह करी

115

बात जियमें धरी ग्रहि पथ ग्रंथ सरी सबवे जो कारी॰

प्रेमके पुंजमें रास रस कंजमे पहि रासवनि श्रुति रे

गा भारी ॥ जमुन ग्रह प्राण पति और सब प्राण ह

त वहै जन जीव पर दया विचारी ॥ कौन स्वामी

दौरि करि सोर करि जाय पियसौं कहैं अलिनि आन
र मनमैं जु हरषैं ॥ नाम निर्मोलन गले कोऊ नाम
को भक्त गावत हियैं हार करषैं ॥ रसिक प्रीतम
को होत जापर कृपासोई जमुना जू को रूप परषैं ॥
रागिनी राम कली ताल षट्पदी ॥ धनजनम
ने निधि देन हारी ॥ इतिअस्थाई । करत गुणगान

रा·रा·
११६

116

निकट वहत मंदे ॥ जाके तट निकट हरिदास
मंडल रच्यो तहां निर्तत नना थेई थेंदे ॥ जयति
कलिंद गिरि नंदनी देति आनंदनी भक्तके हरे
सव डाव दंदे ॥ तिनमैं ध्यान धर मुदित ब्रज
पति कहै जयति जमनै जयति नंद नंदे ॥
रागिनी राम कली ताल ? ध्रुपद जमुनाके

गिरि धरन श्री विट्ठल प्रीति की लीयें यह में प्रदारी
रागिनी राम कली ताल षट्पदी ॥ चर्चरी ॥
जयति भानु तनया चरण युगल वंदे ॥ इतिश्रुस्था
ई ॥ जयति ब्रजराज नंदन प्रिये सर्वदा देहि आनंद
पो शरद वंदे ॥ इत्यंतरा । अथाभोगः ॥ जयति
सकल सुख कारनी कुंस मनो हारनी श्री गोकुल

रा.रा. सेवा मोहि सब नैन दीजो भोगन नैनन रोई ॥
११८ 117 गावत पांन उगवत श्रवननमें विषया रसमें मोई ॥
रसिक कहत दीनकैं जाके लहरि समुद समोई
रागिनी रामकली ताल षट्पदी ॥ श्री
म्र जँना जीदीन जोनि मोहि दीजे ॥ इतिश्र्याई ॥
नंदको लाल सदा वरमांगु सब गोपिनको दासी

श्रीजमुनैं नमसी औरन कोई ॥ इतिश्रस्थाई ॥ क
रो क्रुपा निज दीन जांनिकैं ब्रज निज बासो होई ॥
अंतरा ॥ अथआभोगः ॥ ताको चरण शरण न
रनि तनया जनम आपदा खोई ॥ इह संसारसु
षैं स्वारथकौ सत पतिस गोन कोई ॥ प्रेम भ
जनमैं करत बिछनता संत संताप सोई ॥ ताको

रा॰रा॰
११८

नाथ अति रस भरे जल क्रीडा सुख कारी ॥ मनो
तारा मध्य चंद विराजत भरि भरि छिरकत नारी ॥
दोनो जन के पाइ लागि विनती करि सदा को कार
ज सब कीजे ॥ परमानंद प्रभु सब सुख दाता
रहै रस नैन भरि पीजे ॥ रागिनी रामकली
ताल ८ अष्टपदी ॥ श्रीजमुनाजी यह विन

कीजे ॥ इति नृत्य । अथ आभोगः ॥ तुम हो परम
उदार कृपा निधि संत जनन सुख कारी ॥ निहा
रे बस बरनन राधा वर नट खेलैं गिरि धारी ॥
सब सखियन मिलि हरि संग खेलैं अद्भुत रास
विलासी ॥ निहारे अलिन मध्य निकट कुंज उ
म कमल अरु पहे सुबासी ॥ श्रम जल सहित

रा॰रा॰
११९
119

ल लालके उछ वादने उरिये ॥ त्रिविध दोष हरि
हो कालिंद्री नेक कृपा करि ढरिये ॥ गोविंद स
दा इहै वर मांगं तुम्हारे चरण श्रव सरिये ॥ रागि
नी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ श्रीजमुना
भुवनपावनी धा
जी प्रथम उदारनी मैं जानी ॥ इति अस्थाई ॥ गो
पन संग श्याम घन सुंदर नीर त्रिभंगी होनी ॥ इत

नी चित धरिये ॥ इति श्री सुखाई ॥ गिरिधर लाल कृ

पाल चित दै रति जन्म जन्म मोहि के दिये ॥ इमैंनरा ॥

अथ श्री भोगः ॥ विष सागर संसार विषम अति वि

कार संगते उरिये ॥ काम क्रोध अज्ञान तिमर अ

ति उर अंतर तें हरिये ॥ तुम्हारे निकट बसौं निज

जन संग हृप देखि मन फरिये ॥ गावै गुण गोपा

ग॰ग॰
१२

120

जी पतित पावन कह्यो ॥ इतिश्रपद्याई ॥ प्रथमही
जब दरस दीनौ सकल पापजु हर्‍यो ॥ इत्येतरा ॥
प्रथग्रामोगः ॥ भजन रंगन परम कीनौ पय पो
नदे स्राव भर्‍यो ॥ नाम लेतहि गई दुरमति हस
दस बस नह्यो ॥ गोप कन्या कीयो मज्जन लाल
गिरिधर वह्यो ॥ सूर श्रीगोपाल निरखत सकल

नेग ॥ अथअष्टमोगः ॥ गंगा चरण परसते पावन
हर सिर विकर समानी ॥ स्नात समंद भेदि जमभ
गिनी हरि नाव सिखल परेनी ॥ आलिंगन छेव
न रस विलसत प्रेम पुंज ठकुरानी ॥ गोविंद प्रभ
रवि तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खांनी ॥ ॥
रागिनी राम कली ताल ५ षट्पदी ॥ श्रीजय

रा·रा` जे उग्र वैरागा जाके लेवि लावन शारन ॥ सुर हरि
१२२ के भक्त दाता विघ्न नारण नदन ॥ रागिनी राम
कली नाल ९ षट्पदी ॥ गाउ रसिक नट भवा
ल गुण अने तन पार कमल नयन पियजसोदा ड
लाकु ॥ प्रतिअस्थाई ॥ प्रकट पुरुष साकु पृथ्वी
तल हरे भाकु जानन महिमा जाके उरहि उरगहाल·

कारज सर्‍यो ॥ रागिनी रामकली ताल २ षट
पदी ॥ श्रीजमुनाजी पतित पावन करन इतिश्र
ध्याई ॥ प्रथम सही जाको दरस पायो कोटि कल
मल हरन ॥ अंतरा ॥ अथ आभोग ॥ पैठत
ही भज तरंग परसत मिटत जियकी जरन ॥
नाम उचरत श्रुतवानी त्रप्पपोषन भरन ॥ ३।

रा-रां
१२३
122

प्रभु हरि सर्व सदा नाह ॥ रागिनी रामकली नाल ३
प्रगटी ॥ राम रस गोविंद करत विहार ॥ इतिश्र
स्याई ॥ सुर सनाके भलिनरम्य मंडे फूले कुंद मं
दार ॥ अंतरा ॥ अथ श्यामोवाचः ॥ शरद भवन शीत द
ल विकसित कोमल सकलित कुमुद कल्हार ॥
मलय पवन वहे शारद स्मरण चंद मधुप झंकार ॥

रंगतरा । अथरामेगः ॥ राम कली एक ताल नाचे
अमेव विहारु कालिंदी पुलिन सखी लोचन निहा
रु ॥ उत्तम भूषन धारु तन लेपि चंदन साह वृंदावन
चंद वढ़ै दिसि उजियारु ॥ मोहन नंद कुमार संग
संग सुकुमारु गिरिवर धर जस त्रिलोक विस्तारु०
अभय कर उदारु व्रज भामिनि सिंगारु कुल दास

रा॰रा॰
१२३

123

कि भेद मिल वन वेण स्वरनि वेधान ॥ इसोनरा ॥

ग्रथ स्वामी भोग ॥ नरनिजा कर लहर विर विन पु

लिन केलि वेधान ॥ शरद रजनी विमल उड पति

मलय पवन स्वठान ॥ राग बारि समूह नोउव ला

स्य कला निधान ॥ व्रज वधू संग स्वदिन नोठन

लेन ग्रव हरनोन ॥ वसी कृत गण सिह स्वर ग

सुघर राइ संगीत कला निधि मोहन नंद कुमार ॥ व
ज भामिन संग प्रभु दिन नाचत नव चर्चित तन सार ०
उभय स्वरूप सुभग नागरी वे को कक ला सुखव सार ०
कृष्ण दास स्वामी गिरिधर पिय पहरे रसमय हार ॥
रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥ गोविं
द करत मोहन गान ॥ इति अस्थाई ॥ सम स्वर ग

गो॰गा॰
१२४
124

मेरे प्राण जीवन धन गोरस मोतें दूर दुरावे ॥ वेनो
खीर खांड पक वांनले विविध ले पानहि मोहि जगा
वे ॥ तेल सुगंध लगाइ प्रीतिसों नाने नीरनह वा
वे ॥ भूषन वसन विविधि मन भाए पलटि पलटि
पहिरावे ॥ नैना आंजि तिलक म्रगमद कीर द
र्पन मोहि दिखावे ॥ षटरस विंजन मोहि जे वावे

गथ किन ब्योम बिमांन ॥ कुंभदास बिला सरस
गिरि धरन सब गुन जांन ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ अष्टापदी ॥ रसो मोहि श्री वल्लभ गृह भावे
इति अस्थाई ॥ ब्रजनि मैयां नेंनमोउर मांखन हूय दहो
जो ब्रजपावे ॥ अंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ नेंनो कह
गकि पिन कहा कहूं तिन उरि मोहि रिवि झावे ॥

ग·ग·
१२५
125

दिवस आवत जब मेरो आंगन चौक पुरावे ॥ बाजे ब
जु बिधि द्वारें बाजे बंदन वार बंधावे ॥ मेरे गृह गुनि
जनपै मोको सम सगुनि जो सुनावे ॥ हरदी दूब
अछत दधि कुंभ कुंभ मंगल कलस भरावे ॥ पैंन
दिवावें द्विज जनकों मोपेंसु भग असीस पढावे ॥
केतिक बानक होंहे हिनकी मोपें कही यन आवे ॥

हितसौंवी गाव खवावे ॥ भंवरा चकई विविध गिव
लौं ना लेकरि मोहि खिलावे ॥ विविधि कुसुमग्र
पनै कर गुहि लैले माला उर लावे ॥ खवद पर्यंक
संवारि मडुल अतिना पर मोहि सवावे ॥ डोल झु
लावे रथ वैठावै हिंडोरा पलना झुलावे ॥ रितव
संत जानि जीय अपनै लै स्वांग खिर कावे ॥ जनम

रा·रा·
१२६
126

मिटावै ॥ मेरे लीयें पवित्रा राखी अति सुंदर जो बना
वै ॥ सबै भांति प्रीति ब्रजजन की आयें करिजो
सि खावै ॥ दसमी विजै जानि रघुवर कों जब श्रेकृ
व सीस धरावै ॥ बहु विधि पाक संवारि मोहि हि
त मणि दीप दोनहीं दिखावै ॥ शारद सुन्यों रास
दिन मेरो नट वर भेष बनावै ॥ मोर मुकुट पीतो

मेरे प्राउभीव दिवस दिन आनंद उरन समावे ॥ न

न दिनन प्रभोग करि मोकौं हितसौं भोग लगावे ॥

घसि गुलाब के नीरसुं चंदन लेकरसौं बसावे ॥

सीतल वारि बयार अति सीतल देसे तामो रहि रिझा

वे ॥ सीतल नीर सुगंध सुवासित करि आपि वास

न लावे ॥ भरि भरि जल जनाय सीस परमोतन नाय

रा·रा·
१२८
127

जन वृथा जन्म गमावे ॥ रसिक कहे श्रीवल्लभ क
रुणा बिनु इह फल कबहू न पावे ॥ रागिनी राम
कली ताल ध्रुपद ॥ चर्चरी ऊंबरि राधि
का नव सकल सौभाग्य सीवया वदन परकोटिश
न वेदवारो ॥ इति ध्रुपद्याई ॥ लेजन ऊरंगा शनको
टि नैननि उपर वारनै करत जीयमै विचारौं ॥ इत

वर काञ्चनी मुरली करहि गहावै ॥ सुरभी वरदैनो
नि ऊड़की निसि फनि फनि लाडलडावै ॥ सुरप
ति मंत भेग ग्रलि पदनव गो गिरि राज सजावै ॥
कातिक सुदि एका दशिके दिन केज महल जो व
नावै ॥ पाट सुरंग वसन पहिरावन श्रवो धनो प
रव मनावै ॥ श्रलि मलि मेट करम जउ कलि श्रव

रा॰रा॰ रारो ॥ नाग शत कोटि बेनी ऊपर कपोत शतको
१२८
128
टि ग्रीवो पर वारि हरि सारौं ॥ कमल शत कोटि क
र जुगल पर वार नैंना छिनकोउ लोक उपमा जथा
रौं ॥ दास जे भन स्वामिनी सनख सिख शोभा ग्रद
भन सठौन कहाँ लगि मे भारौं ॥ लाल गिरिवर
धरन कहन मोहि नाहि लौं सख जो लौं बहु रूप

नरा ॥ अथआभोगः ॥ कदली शत कोटि जंघन ऊ
पर सिंह शत कोटि कटि परत्यौ न्छावर उतारौं ॥
मत्त गज कोटि शतचाल पर कुंभ शत कोटि इन
कुचन पर वारि डारौं ॥ कीर शत कोटि नासा ऊपर
कुंद शत कोटि दसननि ऊपर कहिन पारौं ॥ पक्क
केहूव वंधूक शत कोटि अधरनि ऊपर वारि हचियार्भ

गा·गा· थ्यथ्यामोराः ॥ व्रज सुंदरी वयस्य म्हरभी हेद म
१२९ गी गण निरूपम भावा मंगल सिंधुवयाः ॥ मं
129 गल मीघत्मिन शुन मीहण भाषण मन्त्रन ना
साथुट गत मका फल वलने ॥ कोमल वल देश
लि दल संगत वेणु निनाद विमोहित हेदा वन
भविजाना ॥ मंगल मविले गोपी शिजवति मंय

छिन छिन निहारौं ॥ रागिनी रामकली ताल

२ मंगलार्ति ॥ मंगल मंगल ब्रज भुवि मंगलं

रतिअस्थाई ॥ मंगल मिह श्रीनंद यशोदा नाम सुकी

र्तनमें तद्रुचिरोत्संग सु लालित पालित रूपं ॥

ध्रुवपद ॥ श्रीश्री कृष्ण इति श्रुति सारं नाम स्वा

र्तजना शयता पापह मिति मंगलरावं ॥ इत्येतत

रा॰रा॰ १३०

130

नी ॥ छगन मगन तुम करहु कलेउ मेरे सब सु
खदैनी ॥ जननी वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत
त बात तुतरौनी नंददास कीनौं बलि हारी जसुम
ति मन हरन खौनी ॥ रागिनी रामकली ताल
ध्रुपदी चर्चरी ॥ नवकुंवर चक्र चूडानृपति सो
बनो राधिके तरुणि मनें पद रानी ॥ इति श्रुत्याई

र गति विभ्रम मोहति रासस्थित गाते ॥ नैजय सत
ते गोवर्द्धन धर पालय निजदास ॥ रागिनी राम
कली ताल २ षट्पदी ॥ जगावति अपने सुत
कौ रांनी ॥ इति अष्टपाई ॥ उठो मेरे लाल मनोहर
सुंदर कहि कहि मधुरी वांनी ॥ इत्येतदा ॥ अथश्री
भोगः ॥ मांखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई श्री

रा॰ रा॰ नी ॥ सम्प्रगुण पागिया काल बड़वा जहां डारिये
१३१ काम जन खहूल निसानी ॥ नील मकैन पैरें झेज
131
झस मित महल मध्य कमनीयसे पढ़ांनी ॥ पलन
बिछुरन दोउ जान नहीं नहीं कोउ ध्यास महल नि
लियें पीक हांनी ॥ रागिनी रामकली ताल ३
षट्पदी ॥ वनी वृष भांन जानकी बेटी ॥ इतिश्री

सेस महस आदि बैकुंठ पर्यंत लोलो कथ्यैं न बजरा
ज पंनी ॥ इसे नरा ॥ अथ आमोगः ॥ सेव जप
न कोटि वारासीव न जहो सक्ति वारैं जहो भरत
पंनी ॥ सूर ससि पहूकवा पवन परजन्य इंद्र व
रण दासी भाट निगम बोनी ॥ धर्म ऊत बालख
क सनत नारद बारु बाल सनकादि बरचारि ज्ञा

रा॰गा॰ रागिनी रामकली ताल गीत अष्टपदी ।। दयि मध्या

१३२

132

ति नेह नौंरह रानी करति सब गुण गान ।। इति मध्या

ई ।। नील निवद अंग दिव्य दुकूल वरपरि धान ।। नै

लि करषति हरष धर कनि वलय कंकन पान ।।

इंगनरा ।। अथ आभोगः ।। स्वेदक नयन वदन वि

धुपर सुधा विंदु समान ।। केश कुसुमनि करत म

स्याई ॥ निविडनि कुंज कुसुम पुंजनि पर स्यामवा
म अंग लेटी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ रतिनि
सि जागी सोवत भोर किसोर कुंवरि रज रेटी ॥ पि
य के हिय मैं जिय ज्यौं राजत नाहु बाहु बल वेटी ॥
नैननि की सैननि कल मानौं मन मथ घुमित खेटी-
लोभि लाल स्याम की स्वामिनि कंचन रासि समेटी- ॥

ག་ཀ
༡༣༣
133

गिना टेक जल कनिकान ॥ पयो धर पय श्रवन
चातिक कमल पत निधारान ॥ सहस आनन करि
सके नहीं व्यास भाग वखान ॥ जगत वंदन मान
पित्र निगादा धर धरि ध्यान ॥

अथ रागिनी विभावती गीत गोविंद परिछेद माह ताल

श्लोक ॥ मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै

र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय । इत्थं नंद

निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं । राधामाधवयो

र्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः १ वाग्देवताचरित

चित्रितचित्तसद्मा पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती ॥

गी·दे
गी

श्री वासुदेव रतिकेलिकथा समेत मेतं करोति जयदेव
कविः प्रबन्धम् २ यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि वि
लासकला सुकुतूहलम् । मधुरकोमल कान्त पदावली
शृणु तदा जयदेव सरस्वतीं ३ वाचः पल्लव यत्युमापति
धरः सन्दर्भ शुद्धिं गिरां । जानीते जयदेव एव शरणः श्ला
घ्यो दुरूहद्रुते । शृंगारोत्तर सत्प्रमेय रचनै राचार्यगोवर्द्ध

न स्पर्द्धी कोपिन विश्रुतः श्रुतिधरो धोयीः कविक्ष्माप

तिः॥४॥ अष्टपदी॥ प्रलयपयोधिजले धृतवानसिवेदं·

विहितवहित्रचरित्रमखेदम्।केशवधृतमीनशरीर

जयजगदीशहरे।ध्रुव।१॥ क्षितिरतिविपुलतरे त

व तिष्ठति पृष्ठे। धरणीधरणकिणचक्रगरिष्ठे। केश

व धृतकच्छपरूप जयजगदीशहरे २ वसति दशन

ग-टे
गीं

शिखरे धरणी तव लग्ना । शशिनि कलंक कलेव निमग्ना
केशव धृत सूकर रूप जय जगदीश हरे । ३। तव करकम
लवरे नखमद्भुत शृंगे । दलित हिरण्यकशिपु तनुभृंगे
केशव धृत नरहरि रूप जय जगदीश हरे ४ छलयसि
विक्रमणे बलिमद्भुत वामन । पदनखनीरजनित जन
पावन । केशव धृत वामन रूप जय जगदीश हरे ॥ ५॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं । स्नपयसि पयसि श
मितभवतापम् । केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश
हरे ६ वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति कमनीयं । दशमुख
मौलिबलिं रमणीयम् । केशव धृतरामशरीर जय जग
दीशहरे ७ वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं । हल
हतिभीतिमिलितयमुनाभम् । केशव धृतहलधररूप

गी·गो
गी

जय जगदीश हरे ८ निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं। स
दय हृदय दर्शित पशुघातम्। केशव धृत बुद्धशरीर जय
जगदीश हरे ९ म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं।
धूमकेतुमिव किमपि करालम्। केशव कल्कि शरीर
जय जगदीश हरे १० श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं॥
शृणु शुभदं सुखदं भवसारं। केशव धृत दशविधरूप ज

य जगदीश हरे ॥११॥ श्लोक॥ वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगो
लमुद्बिभ्रते । दैत्यान्दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ·
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते । म्लेच्छा
न् मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः १२ अष्ट
पदी ॥२॥ श्रितकमला कुच मंडल धृतकुंडल । कलि
त ललित वनमाल । जयजय देव हरे । ध्रुव ।१॥ दिन

ग·टे
गी·

मणि मंडल मंडन भव खंडन । मुनि जन मानस हंस जय
जय देव हरे २ कालिय विषधर गंजन जनरंजन । यदुकु
ल नलिन दिनेश जय जय देव हरे ३ मधु मुर नरक विना
शन गरुडासन । सुर कुल केलि निदान जय जय देव हरे
४ अमल कमल दल लोचन भव मोचन । त्रिभुवन भवन
निधान । जय जय देव हरे ५ जनक सुता कृत भूषण जि

५ ४

त दूषणम् । समरशमित दशकंठ जयजय देव हरे ६ अभि
नव जलधर सुंदर धृतमंदर । श्रीमुख चंद्रचकोर जयज
य देव हरे ७ तव चरणे प्रणतावय मिति भावय । कुरु
कुशलं प्रणतेषु जयजय देव हरे ८ श्रीजयदेवकवेरि
दं कुरुते मुदम् । मंगल मुज्ज्वल गीतं जयजय देव हरे ९
श्लोक ॥ पद्मा पयोधर तटी परिरंभलग्न काश्मीरमु

गा॰ टं॰
गी॰

द्धितमरो मधुसूदनस्य। व्यक्तानुरागमिव खेलदनंगखे
दस्वेदाम्बुपूरमनुपूरयतु प्रियं वः॥२॥ वसंते वासन्तीकु
सुमसुकुमारैरवयवै र्भ्रमंती कांतारे। बहुविहितकृष्णा
नुसरणां। भ्रमनं कंदर्पज्वरजनितचिंताकुलतया। व
लद्बाधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी॥२॥ अष्टपदी॥३॥
ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे।

मधुकरनिकरकरम्बितकोकिल कूजित कुंज कुटीरे ।।१

विहरति हरिरिह सरसवसंते नृत्यति युवतिजनेन समं

सखि विरहिजनस्य दुरंते ध्रुव-। उन्मद मदन मनोरथ

पथिकवधूजनजनित विलापे। अलिकुल संकुल कु

सुम समूह निराकुल वकुल कलापे २ मृगमद सौरभ

रभस वशंवद नवदल मालतमाले। युवजन हृदय वि

गा वें
गी·

दारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ३ मदनमहीप
ति कनक दंडरुचि केसर कुसुम विकासे । मिलितशि
ली मुखपाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ४ विग
लित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृतहासे ।
विरहि निकृन्तन मुख कृति केतकि दन्तुरितासे । ५ ॥
माधविका परिमल ललिते नवमालिक यातिसुगंधौ·

मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबंधौ ॥६॥
स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते-
वृंदावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ७
श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति। हरिचरणस्मृतिसा
रम्। सरसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनवि
कारम् ८ ॥ श्लोक॥ दरविदलितमल्लीवल्लिचंचत्परा

गी॰ख॰ गन्धकलितपटवासैर्वासयन्काननानि । इह हि दहति
गी॰ चेतः केतकीगन्धबन्धुः प्रसरदसमबाणप्राणवद्गन्ध
वाहः १ उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूताङ्कु
रक्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्व
राः । नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्ष
णप्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः २ 7
6

अनेक नारी परिरंभ संभ्रमस्फुरन्मनो हारि विलास लाल

सम् । मुरारिमारादुप दर्शयंत्यसौ सखी समक्षं पुनराह

राधिकाम् ३ ।। अष्टपदी ।४।। चंदन चर्चित नील कलेव

र पीत वसन वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल मंडि

त गंड युगस्मित शाली । हरिरिह मुग्ध वधूनिकरे वि

लासिनि विलसति केलिपरे ।१।। ध्रुव ।। पीनपयोधरभा

ग·वे
गी·

रभरेण हरिं परिरभ्य सरागम् । गोपवधूरनुगायति काचिदु
दंचितपंचमरागम् । हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि
विलसति केलिपरे २ कापि विलासविलोलविलोचनखे
लनजनितमनोजं । ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदन
वदनसरोजम् हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि वि
लसति केलिपरे ३ कापि कपोलतले मिलिता लपितुं

किमपि श्रुतिमूले । चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पु
लकैरनुकूले हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विल
सति केलिपरे ४ केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमु
नाजलकूले । मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दु
कूले । हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलस
ति केलिपरे ५ करतलतालतरलवलयावलिकलित

गी॰गो॰
गी॰

कलस्वनवंशे। रासरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रश
शंसे। हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति
केलिपरे ६ श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि
रमयति रामां। पश्यति सस्मितचारुपरामपरामनुगच्छ
ति वामां॥ हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति
केलिपरे ७ श्रीजयदेवभणितमिदमद्भुतकेशवकेलि ९

रहस्यम् । विपिन विनोद कला वलिते वितनोतु शुभा
नि यशस्यम् । हरिरिह मुग्ध वधूनिकरे विलासिनि वि
लसति केलिपरे ८ ॥ श्लोक विश्वेषा मनुरंजनेन जन
यन्नानंद मिंदीवर । श्रेणी श्यामल कोमलै रुपनयन्नंगै
रनंगोत्सवम् । स्वच्छंदं व्रजसुंदरी भिरभितः प्रत्यंग मा
लिङ्गितः । शृंगारः सखि मूर्त्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः

गा॰ टिं
गीं

क्रीडति १ अथोन्मत्तवमद्भुजंगकवलक्लेशादिवेशाचलं
प्रालेयप्लवनेच्छयानुसरति । श्रीखंडशैलानिलः । किं
च स्निग्धरसालमौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षोदया । उ
न्मीलंति कुहूः कुहूरिति कलोत्तालाः पिकानांगिरः २
रासोल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवा । मभ्य
र्णं परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमांधया राधया । साधुत्वद्वद

10

ने सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुतिव्याजादुद्भटचुम्बि
तः स्मितमनोहारी हरिः पातु वः ३ ॥ विहरति वने राधा
साधारणप्रणये हरौ विगलितनिजोत्कर्षादीर्ष्यावशेन
गतान्यतः । क्वचिदपि लताकुंजे गुंजन्मधुव्रतमंडलीमु
खरशिखरे लीना दीनाप्युवाच रहः सखीम् ४ ॥ गुर्ज
री । ५ ॥ संचरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशे

रा॰ दे॰
गी॰

वलितदृगंचलचंचलमौलिकपोलविलोलवतंसम।रा

से हरिरिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृतपरिहासं

फव।१। चंद्रकचारुमयूरशिखंडकमंडलवलयितके

शम्। प्रचुरपुरंदरधनुरनुरंजितमेदुरमुदिरसुवेशम्

रासे हरिरिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृतपरिहा

सम्।२। गोपकदंबनितंबवतीमुखचुंबनलंभित

॥

लोभम् । बंधुजीव मधुरा धर पल्लव मुल्लसित स्मितशोभं
रासे हरिमिह विहित विलासं स्मरति मनो मम कृतपरि
हासम् ३ ॥ विपुल पुलक भुज पल्लव वलयित वल्लव यु
वति सहस्रम् । कर चरणोरसि मणि गण भूषण किर
ण विभिन्नतमिस्रम् । रासे हरिमिह विहित विलासं
स्मरति मनो मम कृतपरिहासम् ४ जलद पटल वल

गी·टी
गी

दिंदु विनिंदक चंदन तिलक ललाटम् । पीन पयोधर परि
सर मर्द्दन निर्द्दय हृदय कवाटम् । रासे हरिमिह विहित
विलासे स्मरति मनो मम कृत परिहासम् ५ मणिमय
मकर मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारम् । पीन वसन म
नुगत मुनि मनुज सुरासुर वर परिवारम् । रासे हरिमिह
विहित विलासे स्मरति मनो मम कृत परिहासम् ॥ ६ ॥

विशदकदम्बतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयंतम्
मामपि किमपि तरंगदनंगदृशा मनसा रमयंतम्। रा
से हरिमिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृतपरि
हासम् ७ श्रीजयदेवभणितमतिसुंदरमोहनमधुरिपु
रूपम्। हरिचरणस्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवतामनुरूपं
रासे हरिमिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृतपरि

गा। वे
गीं

ह्लासम् ८ ॥ श्लोक ॥ गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमादपि
नेहते वहति च परितोषं दोषं विमुंचति दूरतः । युवतिषु
वलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना पुनरपि मनो कामं
कामं करोति करोमि किम् १ ॥ अष्टपदी ६ ॥ निभृतनि
कुंजगृहं गतया निशि रहसि निलीय वसंतं । चकितवि
लोकितसकलदिशा रतिरभसरसेन हसंतं । सखि हे के

शि मथन मुदारं । रमय मया सह मदन मनोरथ भावितया

सविकारम् । ध्रुव-१। प्रथम समागम लज्जितया पटुचाटु

शतैरनुकूलं । मृदु मधुरस्मित भाषितया शिथिली कृत

जघन दुकूलम् । सखि हे केशि मथन मुदारं रमय मया

सह मदन मनोरथ भावितया सविकारम् ।२। किस

लय शयन निवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम् ॥

गा॰ टे
गी॰

कृत परिरंभण चुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम्। सखि
हे केशिमथन मुदारं रमय मया सह मदन मनोरथभा
वितया सविकारम् ॥३॥ अलस निमीलित लोचनया पु
लकावलि ललित कपोलम्। श्रमजल सकल कलेव
रया वरमदन मदादतिलोले। सखि हे केशिमथन मु
दारं रमय मया सह मदन मनोरथभावितया सविकारं ४

कोकिल कलरव कूजितया जितमनसिजतंत्रविचारं । स्म

थ कुसुमा कुल कुंतलया नख लिखित घनस्तनभारम्

सखि हे केशि मथन मुदारं रमय मया सह मदन मनोरथ

भावितया सविकारम् ५ चरण रणित मणिनूपुरया प

रिपूरित सुरत वितानम् । मुखर विशृंखल मेखलया

सकच ग्रह चुम्बन दानम् । सखि हे केशि मथनमुदारम्

ग·खं·
गी·

रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम् ॥८

रतिसुखसमयरसालसया दरमुकुलितनयनसरोजे।

निःसहनिपतिततनुलतया मधुसूदनमुदितमनोजे

सखि हे केशिमथनमुदारम् रमय मया सह मदनमनो

रथभावितया सविकारम् ७ श्रीजयदेवभणितमिदम

तिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम्। सुखमुत्कंठितगोप

वहुकथितेन विनतेन नत मलीलम् ॥ सखि हे केशिमथन

मुदारम रमय मया सह मदन मनोरथ भाविनया सविका

रम ॥८॥ श्लोक ॥ हस्तस्रस्त विलास वंशम नृज भ्रूव

ल्लिमद्वल्लवी वृंदोत्सारि दृगन्तवी क्षित मति स्वेदार्द्र गंड

स्थलम् । मामुद्वीक्ष्य विलज्जित स्मित सुधा मुग्धानने

कानने । गोविंद व्रज सुंदरी गण वृतं पश्यामि हृष्यामि

ग·टे
गी

व । उग्रालोकस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिका विका
शः कासारोपवनपवनोऽपि व्यथयति । अपि भ्राम्यद्भृङ्गी
रणितरमणीया न मुकुल । प्रसूतिश्चूतानां सखि शिख
रिणीयं सुखयति २ साकूतस्मितमाकुला कुलगलद्ध
म्मिल्लमुल्लासित । भ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजामूला
र्द्धदृष्टस्तनम् । गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य गमिताकांक्षश्चिरं

चिन्तयन्नन्तर्मुग्धमनोहरं हरतु वः क्लेशं नवः केशवः ३
कंसारिरपि संसारवासनाबन्धशृङ्खलाम् । राधामाधाय हृ
दये तत्याज व्रजसुन्दरीः ४ इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकाम
नङ्गबाणव्रणखिन्नमानसः । कृतानुतापः स कलिन्दन
न्दिनीतटान्तकुञ्जे विषसाद माधवः ५ ॥ अष्टपदी ॥ ७ ॥
मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन । सापराधतया ६

ग॰ ह्व
गी॰

या मयापिन वारितातिभयेन। हरिहरिहतादरतयागता

साकुपितेव ध्रु:। किंकरिष्यति किंवदिष्यति सा चिरंविरहे

ण। किंधनेन जनेनकिं ममजीवितेन गृहेण २ चिंतया

मि तदाननं कुटिलभ्रुकोपभरेण। शोणपद्म मिवोपरिभ्र

मताकुलं भ्रमरेण। हरिहरिहतादरतया गता साकुपिते

व ३ तामहं हृदि संगता मनिशं भृशं रमयामि। किंवनेन

१०
17

समामि किंहृद्या विलयामि। हरिहरि हता हरतया गता
साकुपितेव ४ तन्विखिन्नमसूयया हृदयं तवाकलया
मि। तन्नवेद्मि कुतोगतासिन तेन तेनुनयामि॥ हरिहरि
हता हरतया गतासा कुपितेव ५॥ दृश्यसे पुरतोगतागता
मेवमे विदधासि। किंपुरेव ससंभ्रमं परिरंभणंनददा
सि॥ हरिहरि हता हरतया गतासा कुपितेव ६ क्षम्यताम

ग·एवं·
गी·

पदैकदापि न वेदर्शन करोमि । देहि सुंदरि दर्शनं मममन्म

थेन दुनोमि । हरिहरि हता हरतया गता सा कुपितेव ७

वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रणातेन । तिंडुविल्वसमुद्रसं

भवरोहिणी रमणेन । हरिहरि हता हरतया गता सा कु

पितेव ८ ॥ श्लोक ॥ भूपल्लवो धनुरपांगतरंगितानि·

बाणागुणाः श्रवणपालि रिति स्मरेण । तस्यामनंगजय ८

18

जेगम देवनाया। मह्माणि निर्जित जयेति किमर्पितानि

१ हृदि विसलताहारो नायं भुजंगमनायकः। कुवलयद

लश्रेणी कंठे न सा गरलद्युतिः। मलयजरजो नेदं भस्म

यारहिते मयि। प्रहर न हरभ्रान्त्यानंगक्रुधा किमुधाव

सि २ पाणौ मा कुरु चूतसायकममुं मा चापमारोपय

क्रीडानिर्जितविश्वमूर्छितजना। घातेन किं पौरुषम्

ग॰ खं
गी॰

तस्मादेवमङ्गीदृशो मनसिज प्रेमान्कटाक्षा किल । ज्वाला
जर्ज्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि संधुक्षते २ भ्रूचापे नि
हितः कटाक्षविशिखो निर्म्मातु मर्म्मव्यथां । श्यामात्मा
कुटिलः करोतु कबरी भारोपि मारोद्यमं । मोहं तावदयं च
तन्वि तनुतां बिंबाधरो रागवान । सद्वृत्तस्तन मण्डलस्तव
कथं प्राणैर्म्मम क्रीडति ४ तानि स्पर्श सुखानि ते च तरल

स्निग्धादृशो विभ्रमा। स्तद्दृक्कां ब्रजसौरभे मधवस्तथा संदी

पितां विक्रिमा। सा किं वा धरमाधुरीति विषया संगीपि मन

मानंसे। तस्यां लग्न समाधि हंत विरह व्याधिः कथं वर्त्तते

५ तिर्यक्कंठ विलोल मौलि तरलोत्तंसस्य वंशोच्चर ॥

द्गीतस्थान कृता वधान ललना लक्षैर्न संलक्षिताः। सं

मुग्धं मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेंदौ मृदुः। स्पंदं पल

गा॰ खे॰
गी॰

विनाक्ष्विरे दृढतयः दोमेकटाक्षोर्मयः ६ यमुनातीरवा
नीर निकुंजे मंदमास्थितम् । प्राह प्रेमभरोद्भ्रांतं माधवं रा
धिकासखी ७ ॥ गुर्जरी ॥ ८ ॥ निंदति चंदन मिंदु किर
णमनु विंदति खेदमधीरं ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल
मिव कलयति मलय समीरं । सा विरहे तव दीना माधव
मनसिज विशिख भयादिव भावन या त्वयि लीना ॥ ध्रु

अविरल निपतित मदन शरा दिव भवद वनाय विशाले
स्वहृदय मर्म्मणि वर्म्म करोति सजल नलिनी दलजाले
सा विरहे तव दीना माधव मनसिज विशिख भया दिव
भावनया त्वयि लीना २ कुसुम विशिख शरतल्प मन
ल्प विलास कला कमनीयम् । व्रत मिव तव परिरंभ
सुखाय करोति कुसुम शयनीयम् । सा विरहे तव दीना

गी·गो
गी·

माधव मनसिज विशिखे भयादिव भावनया त्वयि लीना ३

वहति(च) वलित विलोचन जलधरमानन कमल मुदारं । वि

धुमिव विकट विधुंतुद दंत दलन गलितामृत धारम् ॥

सा विरहे तव दीना माधव मनसिज विशिखे भयादिव

भावनया त्वयि लीना ४ ॥ विलिखति रहसि कुरंग

मदेन भवंतम समशर भूतम । प्रणमति मकर मधो वि

२८

निधायकरेचशरंनवचूतम्॥ सा विरहे तव दीना माध
व मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि लीना।
५॥ प्रतिपद मिदमपि निगदति माधव तव चरणे पति
ताहम्। त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनु
ते तनुदाहम्॥ सा विरहे तव दीना माधव मनसिज वि
शिख भया दिव भावनया त्वयि लीना ६॥ ध्यानलये

रा एव
गी

नपुरः परिकल्प्य भवेंतमतीव दुरापम् । विलपति हसति
विषीदति रोदिति चंचति मुंचति तापम् ॥ सा विरहे तव
दीना माधव मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि
लीना ७॥ श्रीजयदेव भणित मिदमधिकं यदि मनसा
नटनीयम् । हरिविरहाकुल वल्लव युवति सखी वच
ने पठनीयम् । सा विरहे तव दीना माधव मनसिज वि

शिखेभयादिवभावनयात्वयिलीना ८॥ श्लोक॥ आवा

सो विपिनायते प्रियसखी मालापि जालायते। तापोपि

श्वसितेनदावदहनज्वालाकलापायते। सापित्वद्विरहे

णहंतहरिणीरूपायतेहाकथं। कंदर्पोपियमायतेविर

चयन्शार्दूलविक्रीडितम्॥ अष्टपदी॥ ८॥ स्तनवि

निहितमपिहारमुदारम्। सामनुतेकृशतनुरतिभारं।

ग·टं राधिका विरहे तव केशव । ध्रु॰ ।१। सरसमसृणमपि मल
गीं यजपंकम् । पश्यति विषमिव वपुषि सशंकम् । राधि
का विरहे तव केशव ।२। श्वसित पवन मनुपम परिणाहं
मदन दहनमिव वहति सदाहम् । राधिका विरहे तव के
शव ३ दिशि दिशि किरति सजल कणजालम् । नय
ननलिन मिव विगलित नालम् । राधिका विरहे तव के २३

शव ४।। नयनविषयमपि किसलयतल्पम्। गणय
ति विहितहुताश विकल्पम्। राधिका विरहे तव केश
व ५ त्यजति न पाणितलेन कपोलम्। बालशशिन
मिव सायमलोलम्। राधिका विरहे तव केशव ६ ह
रिरिति हरिरिति जपति सकामम्। विरह विहितम
रणेव निकामम्। राधिका विरहे तव केशव ७ श्रीज

गी·टे
मी

यदेव भणितमिति गीतम् । स्तवयतु केशव पदमुपनी
तम् ॥ राधिका विरहे तव केशव ८ ॥ श्लोक ॥ सा रोमा
ञ्चति सीत्करोति विलपत्युत्कंपते ताम्यति । ध्यायत्युद्भ्रम
ति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्छत्यपि । एतावत्यतनुज्वरे
वरतनुर्जीवेन्न किं ते रसा । स्वर्वैद्यप्रतिम प्रसीदसि यदि
त्यक्तोन्यथा हस्तकः । स्मरातुरां दैवत वैद्यहृद्य त्वदंगसं

गामृतमात्रसाध्या । विमुक्तबाधां कुरुषे न राधामुपेंद्र

वज्रादपि दारुणोसि २ कंदर्पज्वरसंज्वराकुलतनोराश्च

र्यमस्याश्चिरं । चेतश्चंदनचंद्रमःकमलिनीचिंतासु संता

म्यत्यपि । किंतु क्लांतिवशेन शीतलतनुं त्वामेकमेव प्रि

यं । ध्यायंती रहसि स्थिता कथमपि क्षीणा क्षणं प्राणि

ति ३ क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे । नयननिमीलन

रा.खे
गी.

ाविन्नयायपयाने। स्मिति कथमसौ रसालशाखे। विर
विरहेण विलोकनशंकितानाम् ४ दृष्टिव्याकुलगोकु
लावनवशादुद्धृत्य गोवर्धने। बिभ्रद्वल्लवसुंदरीभिर
धिकानंदाच्चिरं चुंबितः। कंदर्पेण तदर्पिताधरतटी सिंदू
र मुद्रांकितो। बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि
कंसद्विषः ५ अरू मिहूनिवसामियाह्निताधामननय ॥

मद्वचनेन चानयेथाः। इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता स्व
यमिदमेत्य पुनर्जगाद राधाम् ६ अष्टपदी॥ वहति मलय
समीरे मदनमुपनिधाय स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृ
दय दलनाय। तव विरहे वनमाली सखि सीदति। ध्रु॰।१
दहति शिशिर मयूखे। मरणमनुकरोति। पतति मद
न विशिखे विलपति विकलतरोति। तव विरहे वनमा

गी॰ गो॰
मी

ली सखि सीदति २ धनति मधुप समूहे श्रवणमपिदधा

ति। मनसि वलित विरहे निशि निशि रुजमपयाति ॥

तव विरहे वनमाली सखि सीदति ३ वसति विपिनविता

ने त्यजति ललितमपि धाम। लुठति धरणिशयने बहु

विलपति तव नाम। तव विरहे वनमाली सखि सीदति

४ भणति कविजयदेवे विरहिविलसितेन। मनसि

भसविभवे। हरिरुदयतु सकृतेन। तवविरहे वनमा
ली सखि सीदति ५ श्लोक॥ पूर्वंयत्रसमंतयारतिपते
रासादिताःसिद्धय। तस्मिन्नेव निकुंज मन्मथमहाती
र्थे पुनर्माधवः। ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपि तवैवालाप
मंत्रावलिं। भूयस्त्वत्कुचकुंभ निर्भरपरीरंभामृतं वां
छति ११ अष्टपदी १०॥ रतिसुखसारे गतमभिसारे। म

ग-वे गी

दनमनोहरवेशम्। नकुरु नितंबिनि गमन विलंवनम

नुसरतं हृदयेशम्। धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वन

माली गोपीपीनपयोधर मर्दन चंचल कर युगशाली ॥१॥ ध्रु-

नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदु वेणुं। बहु मनुते न

नु ते तनु संगतपवनचलितमपि रेणुम् ॥ धीरसमीरे य

मुनातीरे वसति वनमाली गोपीपीनपयोधरमर्दनचंच

लकरयुगशाली २ पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकित
भवदुपयानम्। रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति
तव पंथानम्। धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वनमाली
गोपी पीनपयोधर मर्दन चंचल करयुगशाली ३ मुख
रमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलि सुलोलम्। चल स
खि कुंजं सतिमिर पुंजं शीलय नील निचोलम्। धीरस

ग·वे
गी·

मीरे यमुनातीरे वसति वनमाली गोपीपीन पयोधरम
र्दन चंचल करयुगशाली ४ उरसि मुरारे रुपहित हारे । घ
न इव तरल वलाके तडिदिव पीते रति विपरीते । राजसि सु
कृत विपाके । धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वनमाली
गोपीपीन पयोधर मर्दन चंचल करयुगशाली ५ विग ।
लितवसने परिहृत रशने घटय जघन मपिधाने । कि

मलयशायेने पंकज नयने विपिपिव हर्षनिधानम्॥
धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वनमाली गोपीपीन प
योधरमर्दन चंचलयुग शाली ६ हरिरभिमानी रजनि
रिदानीमियमपि याति विरामम्। कुरुमम वचनं सत्व
रचनं पूरय मधुरिपुकामम्। धीरसमीरे यमुनातीरे
वसति वनमाली गोपीपीन पयोधरमर्दन चंचलयुगशाली ७

गी·टे
मी·

श्रीजयदेवकृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ॥ प्रमु
दितहृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतकमनीयम् ॥
धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वनमाली गोपीपीनपयोध
रमर्दनचंचलकरयुगशाली ।८। श्लोक ॥ विकिरति
मुहुः श्वासानाशाः पुरो मुहुरीक्षते । प्रविशति मुहुः कुं
जं गुंजन् मुहुर्बहु ताम्यति । रचयति मुहुः शय्यां पर्याकु

लेमञ्जरीकेते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रियस्तव वर्त्तते १

त्वद्वाक्येन समं समग्र मधुना तिग्मांशुरस्तंगतो । गोवि

दस्यमनोरथेनचसमंप्राप्तंतमःसान्द्रताम् । कोकानां

करुणस्वनेन सदृशी दीर्घामदभ्यर्थना । तन्मुग्धेवि

फलं विलंबनमसौरम्योभिसारक्षणः २ आश्लेषाद

नुचुम्बनादनुनखोल्लेखादनुस्वान्तज । प्रोद्बोधादनु

रा॰खे
मी

संभ्रमादनवरतारंभादनभीनयोः। अन्यार्थं गतयोर्भ्रमा
न्मिलितयोः संभाषणैर्जानतो। दंपत्योर्निशि कोनके
न तमसि व्रीडा विमिश्रो रसः ३ सभयचकितं विन्यस्य
न्तो दृशं तिमिरे पथि। प्रतितरु मुहुः स्थित्वा मंदं पदा
नि वितन्वतीम्। कथमपि रहः प्राप्ता मंगैरनंगतरंगि
भिः। सुमुखि सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थतां ४ ३॰

30

राधामुग्धमुखारविंदमधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थली । ने
पथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारांतकः । स्वछंदं
व्रजसुंदरीजनमनस्तोषप्रदोषश्चिरं । कंसध्वंसनधूम
केतुरवतुत्वां देवकीनंदनः ५ आर्या । अथतांगंतुमश
क्तांचिरमनुरक्तांलतागृहेदृष्ट्वा । तच्चरितंगोविंदेमन
सिजमंदेसखीप्राह ६ ॥ अष्टपदी । ११ ॥ पश्यतिदिशि

रा॰ वि॰
गी॰

दिशिरहसिभवंतम। तदधरमधुरमधूनिपिबंतम॥ नाथहरेजयनाथहरे सीदतिराधावासगृहे॥ ध्रु॰॥१॥ त्वदभिसरणरभसेन वलंती। पतति पदानि कियंति चलंती॥ नाथहरेजयनाथहरे सीदतिराधावासगृहे २ विहित विशदबिसकिसलयवलया। जीवति परमिह तव रति कलया। नाथहरेजयनाथहरे सीदतिराधावासगृहे ३

मुहुरवलोकितमंडनलीला । मधुरिपुरहमितिभाव

नशीला । नाथहरे जयनाथहरे सीदति राधावासगृहे

५ श्लिष्यति चुंबति जलधरकल्पं । हरिरुपगत इति

तिमिरमनल्पम् । नाथहरे जयनाथहरे सीदति राधा

वासगृहे ६॥ भवति विलंबिनि विगलितलज्जा । वि

लपति रोदिति वासकसज्जा । नाथहरे जयनाथहरे सी

रा·ऐ
गी·

दतिराधावासगृहे ७ श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम्। र
सिकजनेतनुतामतिमुदितम्। नाथहरे जयनाथहरे
सीदतिराधावासगृहे ८ ॥ श्लोक॥ विपुलपुलकपा
लिःस्फीतसीत्कारमंतर्जनितजडिमकाकुव्याकुलंव्या
हरंती। तवकितवविधायामंदकंदर्पचिंतां रसजल
धिनिमग्नाध्यानलग्नामृगाक्षी ।९। श्रेराधामरणोक

रोतिबहुशः पत्रेपिसंचारिणि । प्राप्तंत्वांपरिशंकतेवित
नुतेशय्यांचिरंध्यायती । इत्याकल्पविकल्पतल्परच ।
नासंकल्पलीलाशत । व्यासक्तापिविनात्वयावरत
नुर्नैषानिशांनेष्यति २ किंविश्राम्यसिकृष्णभोगि
भवनेभांडीरभूमीरुहि । भ्रातर्यासिनदृष्टिगोचर
मितःसानंदनंदास्पदम । राधाया वचनंतदध्वगमुखा

गा·रे
गी·

नंदांतिके गोपतेः। गोविंदस्य जयंति सायमतिथिप्राश
स्त्यगर्भा गिरः ३ अत्रांतरेव कुलटा कुलवर्त्मपात संजात
पातक इव स्फुट लांछनश्रीः। वृंदावनांतर मदीपयदंशु
जालैर्दिक सुंदरी वदनचंदन बिंदुरिंदुः ४ आर्या प्रसर
ति शशधर बिंबे विहित विलंबेव माधवे विधुरा विरचि
त विविध विलापं सा परितापं चकारोच्चैः ।५।। अष्टप ३३

33

दी।१२।। कथितसमयेपि हरिरहह न ययौ वनम्। ममवि
फलमेतदनुरूपमपि यौवनम्। यामिहे कमिह शरणं स
खीजन वचनवंचिता।ध्रु।१।। यदनुगमनाय निशि ग
हनमपि शीलितम्। तेनमम हृदयमिदम समशरकी
लितम्। यामिहेकमिह शरणं सखीजन वचन वंचिता
२ ममम रणमेव वरमति वितथकेतना। किमिह विष

रा·खे· द्दामि विरहानलमचेतना । यामि हे कमिह शरणं सखीज
गी· नवचनवंचिता ३ मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनी·
कापि हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी । यामि हे क
मिह शरणं सखीजनवचनवंचिता ४ अहह कलयामि व
लयादिमणिभूषणम् । हरिविरहदहनवहनेन बहुदूषणं । यामि हे कमिह शरणं सखीजनवचनवंचिता ॥ ५ ॥